International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 02, No. 01, January - March, 2020, pp.197-200

eqgwŸkZ dk egÙo

दीपावली व्यास*

iLrkouk

हमारे यहाँ प्राचीनकाल से मुहूर्त (शुभ मुहूर्त) का विचार करके कोई भी नया कार्य आरंभ किया जाता है। मुहूर्त शोधन एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। यह बहुत जटिल, किंतु वैसे ही प्रभावशाली भी है। निरन्तर वर्द्धमान भौतिकता और विदेशी संस्कृति के सम्पर्कजन्य प्रभाव ने हमारी आस्था, नियम–संयम और धैर्य को छिन्न–भिन्न कर दिया है। फलतः मुहूर्त जैसी व्यवस्था के प्रति हम उदासीन हो गए हैं। किंतु भौतिक–विज्ञान की कसौटी पर परखने से स्पष्ट होता है कि समय का प्रभाव अवश्य पड़ता है। ज्योतिष ने काल–विवेचन के द्वारा अखिल सृष्टि की जीवनचर्या निर्धारित कर दी है। समय की प्रभावानुभूति हम सभी को होती है। ज्योतिष के द्वारा यह बात सहज ही जानी जा सकती है। प्रत्येक कार्य की सफलता के लिए शुभ मुहूर्त की अनुकूलता अनिवार्य है। प्रतिकूल मुहूर्त असफलतादायक तथा अनिष्टकारी होता हैं।

मुहूर्त का अर्थ है, समय का वह भाग जो ग्रहों–नक्षत्रों की प्रकाश रश्मियों से एक विशेष स्थिति में प्रभावित हो रहा हो। यह प्रभाव किसी कार्य–विशेष के लिए निश्चित रूप से अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का तत्त्व अपने में समाहित रखता है। जिस दिन गुरूवार (वृहस्पतिवार) और पुष्य नक्षत्र हो, उसे 'गुरु–पुष्य' कहते हैं। इस गुरु पुष्य योग का इतना अधिक प्रभाव रहता है कि उस दिन अन्य समय–मान (तिथि, लग्न, योग) चाहे जैसे हो, वे सब नगण्य हो जाते हैं। समस्त दोषों का परिहार करके प्रत्येक कार्य में सफलता देने के लिए गुरु–पुष्य योग अमोघ है। इसी प्रकार रवि–पुष्य योग को सर्वाधिक प्रभावी और शुभ माना गया है।

प्रायः दो घड़ी का एक मुहूर्त होता है। रात–दिन के घटने बढ़ने से कुछ पलों में अन्तर पड़ जाता है। दिन में १५ मुहूर्त होते हैं। शास्त्रकार दिनमान के २। ३। ४। ५ विभाग करते हैं। पहला विभाग यह है कि मध्याह्न से पहले पूर्वाह्न तदनन्तर सायाह्न होता हैं। चौथा विभाग यह है कि तीन मुहूर्त पर्यन्त प्रातःकाल तदनन्तर ३ मुहूर्त पर्यन्त संगव, तदनन्तर तीन मुहूर्त पर्यन्त मध्याह्न, तदनन्तर तीन मुहूर्त पर्यन्त अपराह्न, तदनन्तर तीन मुहूर्त पर्यन्त सायाह्न होता है। सूर्योदय से तीन घड़ी पर्यन्त प्रातः सन्ध्या कहलाती है। सूर्यास्त से तीन घड़ी पर्यन्त सायं सन्ध्या कहलाती है। सूर्यास्त से तीन मुहूर्त पर्यन्त प्रदोष कहलाता है। अर्धरात्र की मध्य की दो घड़ियों को महानिशा कहते हैं। ५५ घड़ी में उषःकाल ५६ घड़ी में अरुणोदय, ५८ घड़ी में प्रातः काल, तदनन्तर सूर्योदय कहलाता है। महानिशा तथा मध्याह्न में मूर्तिमान काल निवास करता है। अतः १० पल पूर्व तथा १० पल पश्चात् सब मिलाकर २० पल में सब काम वर्जित होते हैं।

eqgwrZ fopkj

मुहूर्त शब्द संस्कृत भाषा के हुर्छ धातु से क्त प्रत्यय तथा "धातोः पूर्व मुट् च" के योग से बना है जिसका अर्थ होता है – एक क्षण अथवा समय का अल्प अंश। मुहूर्त शब्द प्रायः तीन अर्थों में प्राचीन काल से ही प्रयुक्त होता रहा है। (१) काल का अल्पांश, (२) दो घटिका (४८ मिनट) तथा (३) वह काल जो किसी कृत्य के लिए योग्य समय हो।

G शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

dky% 'kHk fØ;k ;kX;k egrZ bfr dF;rA[1]

निरूक्तकार यास्क ने मुहुः ऋतुः अति मुहूर्तः कहकर मुहूर्त्त शब्द का निर्वचन किया है। ऋतुः का निर्वचन ऋतुः अर्ते गतिकर्मणः। तथा मुहुः का मुहुः मूढः इव कालः अर्थात् वह काल जो शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। मुहूर्त शब्द वैदिक साहित्य में अनेक बार प्रयुक्त हुआ हैं। पौराणिक काल में २ घटी अर्थात् ४८ मिनट का एक मुहूर्त स्वीकार किया है। अतः एक अहोरात्र ६० घटी में ३० मुहूर्त स्वीकार किये गये हैं। मनुस्मृति, बौधायन धर्मसूत्र, याज्ञवल्क्य स्मृति, महाभारत, रघुवंश आदि ग्रंथों में ब्राह्म मुहूर्त शब्द प्रयुक्त हुआ है। vkFkol.k T;kfr"kA[2] १। ६। ११ में १५ egrk d uke आये हैं जो इस प्रकार है –

1. रौद	2. श्वेत
3. मैत्र	4. सारभट
5. सावित्र	6. वैराज
7. विश्वावसु/विश्वावसु	8. अभिजित्
9. रौहिण	10. बल
11. विजय	12. नैर्ऋत
13. वारुण	14. सौम्य एवं
15. भग	

पुराणों[3] के आधार पर १५ मुहूर्त दिन के तथा १५ रात्रि के मुहूर्त हैं।

fnu d egrZ bl idkj g&

fnok d f‡ egŸk	jkf= d f‡ egŸk
1. रौद्र	1. रौद्र
2. सित	2. गन्धर्व
3. मैत्र	3. यक्षेश
4. चारभट	4. चारण
5. सावित्र	5. वायु(मरुत)
6. वैराज	6. अग्नि
7. गान्धर्व	7. राक्षस
8. अभिजित्	8. ब्रह्मा/धाता
9. रोहिणी	9. सौम्य
10. बल	10. ब्रह्म/पद्मज
11. विजय	11. गुरु/वाक्पति
12. नैऋत्य	12. पौष्ण/पूषा
13. इन्द्र	13. वैकुण्ठ/हरि
14. वरुण तथा	14. वायु तथा
15. भग	15. निर्ऋति

वराहमिहिर के वृहद योगयात्रा नामक ग्रन्थ में ३० मुहूर्त के स्वामियों के नाम आये हैं। यथा –

f'ko Hkt x fe= fi«; o l t yfoÜo fofjfञp i d t iHkok%A

bUnkXuhUn fu'kkpjo#.kkFke;ku;ÜpkfàAA

#nk tkfgc/U;k% Ik"kk n lkUr dkfXu/kkrkj%A

bUnkfnfr x#gfjjfoRo"Vfuyk[;k% {k.kk jk=kAA

vã% i=pn'kk'k jk=Üpo egrZ bfr lKkA[4]

बृहत्संहिता के तिथिकर्मगुणाध्याय में आचार्य वराहमिहिर ने कहा है कि जिन नक्षत्रों में करने के लिए जो कार्य व्यवस्थित हैं वे उनको देवताओं की तिथियों में किये जा सकते हैं तथा करणों और मुहूर्तों में भी वे सम्पादित हो सकते हैं। यथा –

;Rdk;Z u{k=s rnnSoR;klq frfFk"kq rRdk;ZeA
dj.ks"kq eqgwrsZ"ofi rRlf)dj nSorlen'ksZeAA[5] ¼c`gRlafgrkŠŠ@…AA½

आथर्वण ज्योतिष के अनुसार यदि व्यक्ति सफलता चाहता है तो उसे तिथि, नक्षत्र, करण एवं मुहूर्त पर विचार करके कर्म (कार्य) का सम्पादन करना चाहिए –

prqfHkZ% dkj;sRdeZ flf)grks foi'p{k.k%A
frfFku{k=dj.keqgwrZufr fuÜp;%AA[6]

fuf"k) eqgwrZ

दिनमान अथवा रात्रिमान में १५ का भाग देने से एक मुहूर्त का मान निकलता है। दिन में १५ मुहूर्त होते हैं। उनके नाम ये हैं –

1. गिरीश (आद्रा)
2. भुजग (आश्लेषा)
3. मित्र (अनुराधा)
4. पित्र्य (मघा)
5. वसु (धनिष्ठा)
6. अम्बु (पूर्वाषाढ़ा)
7. विश्व (उत्तराषाढ़ा)
8. अभिजित
9. विधाता (रोहिणी)
10. इन्द्र (ज्येष्ठा)
11. इन्द्राग्नी (विशाखा)
12. निर्ऋति (मूल)
13. वरुण (शतभिषा)
14. अर्यमा (उत्तराफाल्गुनी)
15. भग (पूर्वाभाद्रपद)

रात्रि में भी १५ मुहूर्त होते हैं, उनके नाम ये हैं –

1. शिव (आद्रा)
2. अजैकपाद (पूर्वाभाद्रपद)
3. अहिर्बुध्न्य (उत्तराभाद्रपद)
4. पूषा (रेवती)
5. दास्र (अश्विनी)
6. यम (भरणी)
7. अग्नि (कृत्तिका)
8. ब्रह्मा (रोहिणी)
9. चन्द्र (मृगशिरा)
10. अदिति (पुनर्वसु)
11. जीव (पुष्य)
12. विष्णु (श्रवण)
13. अर्वण (हस्त)
14. त्वष्टा (चित्रा)
15. मरुत् (स्वाती)

रविवार के दिन अर्यमा मुहूर्त, चन्द्रवार के दिन ब्रह्मा तथा रक्ष मङ्गल के दिन वह्नि तथा पित्र्य, बुध के दिन अभिजित्, वृहस्पति के दिन जल तथा रक्ष, शुक्र के दिन ब्रह्मा तथा सार्प – ये मुहूर्त निषिद्ध हैं।

eqgwrkZsa esa dju ;ksX; dk;Z

जिस नक्षत्र में जो काम करने को कहा गया है उसी नक्षत्र के देवता के मुहूर्त में यात्रा आदि कर्म करने चाहिये। मध्याह्न में जब अभिजित् मुहूर्त हो तो उसमें सब शुभ कर्म करने चाहिये, यद्यपि उस दिन कितने भी दोष हों। केवल दक्षिण दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिये।

एक मुहूर्त अथवा क्षण का अर्थ दिनमान अथवा रात्रिमान का १५ वां भाग है। श्वेत, मैत्र, विराज, सावित्र, अभिजित्, बल तथा विजय – ये मुहूर्त कार्य साधक हैं। जिस कार्य के लिए जो नक्षत्र उक्त हैं, उन नक्षत्रों के देवता सम्बन्धी तिथि, करण तथा मुहूर्तों में भी वह काम सिद्ध होता है।

राजमार्तण्ड नामक ग्रन्थ में भृगु के आधार पर कहा गया है कि कष्ट के समय में ग्रहों एवं मुहूर्तों की स्थिति पर विचार नहीं किया जाता है –

xgoRl j'kf)Üp ukrs dkyei{krA

LoLFks loifens fpUR;feR;kg HkxokUHkx%AA[7] ¼jkt ekrZ.M]Üykd …ŠŠ½

स्मृतिसागर[8] नामक ग्रन्थ में मुहूर्त की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि काल की स्थिर आत्मा मुहूर्त ही है, इसलिये समस्त मङ्गलकार्य मुहूर्त में ही करने चाहिए। अतः यहाँ कुछ आवश्यक मुहूर्तों की चर्चा की जा रही है। संस्कारों की दृष्टि से तो सभी संस्कार शुभ मुहूर्त में करने चाहिए किन्तु संस्कारों में दो संस्कार– उपनयन एवं विवाह सर्वश्रेष्ठ हैं। इन्हें अवश्य ही शुभ मुहूर्त में ही करना चाहिए।

lUnHkZ xzUFk lwph

1. निरुक्त
2. आथर्वण ज्योतिष 1/6/11
3. पुराण
4. वृहद योगयात्रा
5. वृहत्संहिता, तिथिकर्मगुणाध्याय (99/311)
6. आथर्वण ज्योतिष
7. राजमार्तण्ड, श्लोक 388
8. स्मृतिसागर

❖◆❖